INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

ग्रामीण रूपान्तरण में महिला सहभागिता की बाधाऐं

(Barriers to Women's Participation in Rural Transformation)

डॉ. राजेन्द्र सिंह
समाजशास्त्र विभाग
लालाराम श्रीदेवी महाविद्यालय
अतरौली (अलीगढ़)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/08.2022-41991571/IRJHIS2208005

शोध समस्या :

टी.वी. वॉटोमोर की मान्यता है कि भारतवर्ष में योजना के उद्देश्यों व कठिनाईयों के निरीक्षण करने की ओर विशेष पहल नहीं की गई है, जो इस ओर संकेत करता है कि विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में उत्पन्न बाधाएं आज भी समाजशास्त्रीयों के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। इस परिपेक्ष्य में ग्रामीण रूपान्तरण की सहभागिता में बाधक तत्वों को ज्ञात करना आवश्यक है जिससे कि जो प्रतिरोध ग्रामीण रूपान्तरण के मध्य विद्यमान हैं उनके कारणों को ज्ञात किया जा सके। यथार्थतः समाजशास्त्रीय अध्ययनों का एक लक्ष्य यह भी रहा है कि उन गतिरोधों व बाधक तत्वों को प्रकाश में लाया जाये जो कि मानव सम्बन्धों की व्यवस्था, सामाजिक क्रियाओं, सामाजिक गठन आदि के मध्य उत्पन्न होकर बाधाएं उत्पन्न करते हैं।

ग्रामीण रूपान्तरण ग्रामीण समाज को व्यवस्थित करने, प्रगति के मार्ग में आने वाली रूकावटों एवं कारणों को ज्ञात करना, ग्रामीण परिवर्तन की ही प्रक्रिया है।

ग्रामीण रूपान्तरण एक जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि भारत के विभिन्न गाँवों की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति एवं संरचना में विविधता दृष्टिगोचर होती है जिसके फलस्वरूप विकास कार्यों की योजनाओं एवं कार्यक्रमों को कार्य रूप में परिणित करते हुए भी उनके अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते। योजना की आशा, आकांक्षा की पूर्ति में बाधक बन ग्रामीण रूपान्तरण के व्यवस्थित प्रयास भी परिणामों को देने में सफल नहीं हो पाते हैं।

ग्रामीण स्त्री–पुरूष ग्रामीण रूपान्तरण में सहभागिता करते रहे हैं फिर भी वे सक्रिय रूप से भूमिका निभाने में बाधा महसूस करते रहे हैं। वे बाधक तत्व क्या हैं? जो ग्रामीण नारी को ग्रामीण रूपान्तरण में सहभागिता हेतु बाधित करते हैं? ज्ञात करना प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

शोध क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध पत्र अलीगढ़ के तहसील अतरौली से चयनित निदर्शन पर आधारित किया गया है।

ग्रामीण रूपान्तरण की बाधाएं :

ग्रामीण रूपान्तरण की प्रमुख बाधाओं को निम्नवत चिन्हित किया गया है–

अशिक्षा :

ग्रामीण रूपान्तरण में ग्रामीण महिलाओं का अशिक्षित होना उनकी सहभागिता का प्रमुख बाधक अशिक्षा का कारण ही है। अधिकांश ग्रामीण महिलाएं आज भी अशिक्षित हैं। सरकारी आँकड़ों (2011) के अनुसार महिला साक्षरता का प्रतिशत 53.7 प्रतिशत है तथा प्रतिचयित ग्रामीण महिलाओं की साक्षरता का प्रतिशत 54 है। इससे यह विदित होता है कि प्रतिचयित ग्रामीण महिलाओं में अब भी 46 प्रतिशत महिलाएं अशिक्षित हैं और शिक्षित ग्रामीण महिलाओं में से भी 36 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं मात्र साक्षर हैं। अशिक्षा के कारण जहाँ ग्रामीण महिलाएं स्वयं ग्रामीण रूपान्तरण में सक्रिय नहीं हो पातीं, वहीं पुरूष भी अशिक्षित होने के कारण ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित नहीं कर पाते।

अशिक्षा के कारण पर्दाप्रथा, अज्ञानता होने के परिणामस्वरूप योजनाओं की जानकारी न रहना तथा रूढ़िवादी एवं भाग्यवादी प्रकृति से ग्रामीण महिलाएं ग्रामीण रूपान्तरण में सहयोग से वंचित रह जाती हैं। अतः आज भी पर्दाप्रथा गाँव में अभिशाप बनी हुई है।

स्थानीय राजनीति :

गाँव में पंचायतराज की स्थापना ने ग्रामीण राजनीति को प्रभावित किया है। जाति शक्ति, भू–स्वामित्व आदि के आधार पर गाँव की राजनीति जहाँ राष्ट्रीय राजनीति से सम्बन्ध कर रही है वहीं स्थानीय राजनीति को भी पंचायत शिक्षा सहकारिता से बल मिला है जिससे ग्रामीण रूपान्तरण की गतिशीलता प्रभावित हुई है। गाँव के अन्तर्गत गुटबाजी आदि भी पनपी है जिससे नेतृत्व भी प्रभावित हुआ है। स्थानीय राजनीति गुटबाजी के कारण ग्रामीण रूपान्तरण में बाधा उत्पन्न होती है। स्थानीय राजनीति मूल्यविहीन तथा आदर्शों से परे एवं नीति से पृथक स्वार्थ सिद्धि का माध्यम बनकर उभरी है जिससें गाँव में दलबन्दी, वैमनस्यता आदि में वृद्धि हुई है। स्थानीय राजनीति महिलाओं की सहभागिता को भी आघातित करती है।

31.82 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं स्थानीय राजनीति पर प्रभुत्वशाली जातियों के प्रभावों के कारण ग्रामीण रूपान्तरण में सक्रिय सहभागिता नहीं कर पातीं हैं। एक जाति को प्रभुतवशाली जाति तब कहा जाता है जब वह संख्यात्मक आधार पर किसी गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में शक्तिशाली हो तथा आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से अपने प्रभाव का प्रबल रूप से प्रयोग करती हो, यह आवश्यक नहीं कि परम्परागत जातीय संस्तरण में वह सर्वोच्च जात के रूप में ही हो।

दलबन्दी एवं गुटबन्दी स्थानीय राजनीति के फलस्वरूप गुटबन्दी को प्रोत्साहन मिलता है जो स्थानीय राजनीति को प्रभावित करता है। यथार्थतः गुट एक सामाजिक समूह है विशेष परिस्थितियों में चाहे वह संर्घष की हो अथवा सहयोग की। गुट उन व्यक्तियों का छोटा समूह है जो किसी राजनीतिक अथवा सामाजिक कारण से अपने को एकता के सूत्र में बाँधता है। इस प्रकार प्रत्येक गुट का एक नेता होता है जो अपने अनुयायियों से गुट के प्रति निष्ठा की अपेक्षा रखता है। 62.12 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं इस तथ्य को प्रतिपादित करती हैं कि गाँव में विद्यमान गुटबाजी या दलबन्दी का दबाव ग्रामीण रूपान्तरण की सक्रियता में बाधक बनता है। साथ ही योजनाओं के कार्यान्वयन पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।

26.89 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं भू–स्वामी कृषकों के प्रभाव के कारण ग्रामीण रूपान्तरण की सहभागिता में बाधक बनने की पुष्टि करती हैं। भू–स्वामी का वर्चस्व प्रभु जातियों के रूप में या गुट के नेतृत्व के रूप में ग्रामीण रूपान्तरण के अभिकरणों को प्रभावित करते हैं वही ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय सहभागिता में बाधक बनते हैं।

81.82 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं ग्रामीण रूपान्तरण के लिए सक्रिय सहभागिता में भाग नहीं ले पातीं क्योंकि पुरूष प्रधान समाज, अशिक्षा, पारिवारिक दायित्व का निर्वहन, ग्रामीण गुटबन्दी आदि उसको सहभागिता में अवसर प्रदान नहीं करते हैं।

ग्रामीण महिलाएं इन कारणों यथा–प्रभुजातियों का प्रभाव, गुटबन्दी एवं दलबन्दी, भू–स्वामी कृषकों का प्रभाव तथा सहभागिता के अवसर न मिलने के कारण ग्रामीण रूपान्तरण की सहभागिता में अपनी भूमिका नहीं निभा पाती हैं।

दोषपूर्ण नियोजन :

विचारक इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं कि सभ्यता के प्रारम्भ से ही सामाजिक नियोजन का प्रयोग होता रहा है। इसका लक्ष्य योजनाओं द्वारा मानव जीवन में परिवर्तन करना है।[5]

सामाजिक नियोजन एक जटिल अवधारणा है नीति निर्धारण कर कार्य रूप में रूपान्तरित करने वाली योजना ही सामाजिक नियोजन कहलाती है। विचारकों की दृष्टि में "विवेकपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने का चेतन प्रयास है, जो सम्पूर्ण समग्र के विकास के लिए आवश्यक है।"[6]

इस प्रकार सामाजिक नियोजन सामाजिक नीति के लक्ष्यों के अनुरूप योजनाबद्ध रूप से कार्यरूप में परिणति करने वाली एक वैज्ञानिक व व्यवस्थित अवधारणा है जो किसी समाज को प्रगति की ओर प्रेरित करने में सक्षम होती है। उपस्थित समस्याओं का निराकरण करती है।[7]

भारतवर्ष में ग्रामीण रूपान्तरण हेतु नियोजित कार्यक्रमों का प्रारम्भ सन् 1951 से किया गया। परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए निर्मित योजनाओं के आधार पर नियोजन में कुछ कमियाँ रहीं जिससे ग्रामीण रूपान्तरण का उचित प्रतिफल गाँवों को नहीं मिला। इस सन्दर्भ में ग्रामीण महिलाओं से यह पूछा गया कि क्या दोषपूर्ण नियोजन के कारण ग्रामीण रूपान्तरण में बाधा उत्पन्न होती हैं?

93 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं दोषपूर्ण नियोजन के कारण ग्रामीण रूपान्तरण की बाधा को बताती हैं तथा मात्र 7 प्रतिशत महिलाएं दोषपूर्ण नियोजन को ग्रामीण रूपान्तरण में बाधा नहीं मानती हैं कि ग्रामीण महिलाओं की दृष्टि में नियोजन स्थानीय समस्याओं के अनुरूप न होने के कारण रचनात्मक कार्यक्रमों से अभावग्रस्त रहता है। ग्रामीण रूपान्तरण कार्यक्रम आर्थिक पुनर्निर्माण की ओर अधिक झुकाव रखते हैं, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के प्रति विशेष पहल नहीं करते।

ग्रामीण रूपान्तरण के लिए निर्मित योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु नौकरशाही प्रशासन अर्थात अनेक विकास अधिकारियों की नियुक्ति गाँव में हुई है। "नौकरशाही प्रशासनिक दृष्टि से विभिन्न व्यक्तियों के कार्यकलाप की एक समन्वित व तर्कसंगत व्यवस्था है जो एक विशेष प्रकार की संरचना संगठन को प्रकट करती है।"8

98 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह मानती हैं कि प्रशासन ग्रामीण रूपान्तरण के लिए अनुकूल वातावरण

बनाने में असफल रहा है और केवल 2 प्रतिशत महिलाएं इस तथ्य के विपरीत अपना मत प्रकट करती हैं।

प्रशासन ग्रामीण रूपान्तरण हेतु अनुकूल वातावरण बनाने में असफल रहा है क्योंकि अधिकतर प्रशासनिक अधिकारी आजीविका हेतु गाँव में आते है और वे अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन रहते हैं। प्रशासनिक–भ्रष्टाचार, राजनीति दबाव के कारण और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण 86.05 अधिकारीअपने दायित्व का निर्वाह नहीं कर पाते। योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु पर्याप्त धन का अभाव भी 38.09 प्रतिशत महिलाओं की दृष्टि में प्रशासनिक असफलता का एक कारण है। तथ्य भी इस निर्णय की पुष्टि करते हैं। "ग्रामीण पुनर्निर्माण प्रशासन की व्यवस्था हेतु भी अधिकारियों की नियुक्ति हुई है परन्तु वे अधिकारी ग्रामीण पुनर्निर्माण में कुशल साबित नहीं होते और न ही उनकी सक्रिय सहभागिता ही लक्षित होती हैं।9 साथ ही "ग्रामीण पुनर्निर्माण प्रशासन स्वार्थी, भ्रष्टाचारी, कर्तव्य विमुख है, कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, कर्मचारियों की संख्या नगण्य है, नौकरशाही सत्ता एवं प्रशासन ग्रामीणों को पुनर्निर्माण हेतु सहयोग प्रदान करने तथा सक्रिय करने में सफल नहीं कहे जा सकते।"[10]

87.97 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह मानती हैं कि ग्रामीण नेतृत्व गाँव हित की अपेक्षा निजी स्वार्थ को महत्व प्रदान करता है। 82.82 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह मानती हैं कि ग्रामीण रूपान्तरण में अपराधी एवं माफिया व्यक्तित्व वाले नेताओं का अनुचित हस्तक्षेप रहता है। वहीं 61.85 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि ग्रामीण नेतृत्व जाति हित में अधिक ध्यान देता है तथा 64.94 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह कहती हैं कि ग्रामीण नेतृत्व स्थानीय राजनीति से प्रभावित रहता है।

ग्रामीण नेतृत्व स्वार्थी, जाति हित में सक्रिय तथा स्थानीय राजनीति से प्रभावित होने के कारण ग्रामीण रूपान्तरण में अधिक सहयोग नहीं कर पाता। तथ्य भी इस मान्यता का समर्थन करते हैं कि ग्रामीण नेतृत्व "जाति एवं अभिजातीय हित प्रधान नेतृत्व ने ग्रामीण पुनर्निर्माण मे विशेष सहयोग नहीं दिया।"

अतः "पुनर्निर्माण की सफलता हेतु कुशल नेतृत्व की प्राप्ति न हो पाना भी एक बहुत बड़ी बाधा है, शिक्षा, राजनीति, सामुदायिक विकास, पंचायत का नेतृत्व, ग्रामीण प्रगति में विशेष सहायक नहीं हुआ है।"[11]

सामाजिक परम्पराएं :

75 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं रूढ़िवादिता के कारण परम्परागत व्यवसाय की ही पक्षधर हैं। 83 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण रूपान्तरण के लाभ को कम करती है। 82 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह मानती हैं कि प्राकृतिक प्रकोप (ओलावृष्टि, महामारी आदि) भी ग्रामीण रूपान्तरण को प्रभावित करते हैं। 90 प्रतिशत महिलाएं कहती हैं कि जो लोग शिक्षित हो जाते है वह शहरों को चले जाते हैं। 79 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि संचार सुविधाओं के अभाव के कारण ग्रामीण महिलाएं ग्रामीण योजनाओं से परिचय प्राप्त नहीं कर पाती हैं। 88 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह मानती हैं कि महिला आरक्षण से ग्रामीण महिलाओं में चेतना तो जाग्रत हुई है परन्तु वह ग्रामीण रूपान्तरण में सक्रिय सहयोग नहीं दे पाती हैं। 98 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह मानती हैं कि पुरूष प्रधान समाज ग्रामीण महिलाओं के नेतृत्व में बाधक होता है। 93 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का कहना है कि पर्दाप्रथा ग्रामीण रूपान्तरण में बाधक होती है क्योंकि पर्दाप्रथा के कारण ग्रामीण महिलाएं अपना पक्ष प्रस्तुत नहीं कर पाती हैं। साथ ही साथ 95 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं यह मानती हैं कि ग्रामीण रूपान्तरण हेतु प्रशासन ने शिक्षण–प्रशिक्षण की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है।

रूढ़िवादिता और परम्परागत व्यवसाय को ग्रामीण महिलाएं महत्व देती हैं तथा ग्रामीण रूपान्तरण के लिए जनसंख्या वृद्धि, प्राकृतिक प्रकोप, अशिक्षा, गाँव से शहरों की ओर पलायन, संचार सुविधाओं का अभाव, राजनीतिक चेतना और नेतृत्व क्षमता का अभाव ग्रामीण रूपान्तरण में बाधक बनता है एवं समाज का पुरूष प्रधान होना, पर्दाप्रथा तथा ग्रामीण महिलाओं को शिक्षण–प्रशिक्षण न मिलने के कारण ग्रामीण रूपान्तरण में बाधा उत्पन्न होती है।

ग्रामीण रूपान्तरण हेतु समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक लक्ष्य यह भी रहा है कि उन गतिरोधों व बाधक तत्वों को प्रकाश में लाया जाय जो कि मानव सम्बन्धों की व्यवस्था सामाजिक क्रियाओं, सामाजिक पुनर्गठन आदि के मध्य समस्याओं के रूप में उत्पन्न होकर बाधा उत्पन्न करते हैं। समाजशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य ऐसे बाधक तत्वों की खोज करना, उसके कारणों को जानना रहा है ताकि उसका निराकरण सम्भव हो सके।[12]

अन्य :

समाजशात्रियों की धारणा रही है कि गाँव से प्रतिभा पलायन ग्रामीण रूपान्तरण की एक महत्वपूर्ण बाधा रही है। ग्रामीण महिलाएं (90 प्रतिशत) शिक्षित लोगों को गाँव से शहरों की ओर पलायन को ग्रामीण रूपान्तरण की प्रमुख बाधा मानती हैं। अपने अध्ययन में डॉ. नीलम पालीवाल भी इस तथ्य को प्रकाश में लाती हैं कि शिक्षित व्यक्ति गाँव में रहना पसन्द नहीं करता साथ ही निर्धनता, रोजगार का अभाव, शोषण, कतिपय ऐसे कारण हैं जो ग्रामीणों को शहर की ओर प्रेरित करते हैं।[13]

निष्कर्ष :

इस प्रकार तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण रूपान्तरण में अनेक प्रकार की बाधाएं विद्यमान हैं अर्थात ग्रामीण रूपान्तरण में ग्रामीण महिलाओं की रूढ़िवादिता, परम्परागत व्यवसाय, जनसंख्या वृद्धि, प्राकृतिक प्रकोप, अशिक्षा, शिक्षित लोगों का शहर की ओर पलायन, संचार सुविधाओं का अभाव, महिला जागृति एवं चेतना का अभाव, नेतृत्व क्षमता की कमी तथा महिला शिक्षण–प्रशिक्षण अभाव के कारण आज भी गाँव में ग्रामीण रूपान्तरण में बाधाएं विद्यमान हैं।

सन्दर्भ :

1. टी.वी. वॉटमोरः समाजशास्त्र, समाज विज्ञान (हिन्दी) रचना केन्द्र, जयपुर पृ. 341
2. नीलम पालीवालः ग्रामीण पुनर्निर्माण और साहित्य, पूर्वोक्त. पृ.109
3. A caste is dominat when it is numerically is strongest in the cillege of local area, and Economically and politically exercise a preponderating influence it need be highest cost in term of tradition and concentionded ranking of caste.- Srinivsa,M.N. : India's village,P.7
4. The function is a small group of persons who band together for a political or social cause, each funcation has leader, who expects loyalty from has fellowes- K.N. Venkatarayappa: Rural Sociology and Social Change, P, 40
5. सेमुअल कोइनिंगः पूर्वोक्त, पृ.266
6. E.S. Bar Bogardus: Sociology, Mcmillan Company, Neq York, 1972.

7. The Plan includeds the different measures for the salution of varius problems as well as it determines. The priority among the different goods of the Sociology. In otherwords it can remove the backwardness of the cpuntry in a scientific or systematic manners,- S.C. Gupta: Sociology of Planning in India, Crpwn Publications, New Delhi, 1989. P.35
8. नीलम पालीवालः ग्रामीण पुनर्निर्माण और साहित्य, पृ.118
9. वही, पृ.118–119
10. वही, पृ. 120
11. वही, पृ. 118
12. वही, पृ. 109
13. वही पृ. 120